भगवान दास मोरवाल जी के उपन्यासों में लोक परम्परा और आधुनिक यथार्थ

लीना पटनायक

शोधार्थी, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18771675

ABSTRACT:

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में भगवान दास मोरवाल के उपन्यास लोक परंपरा और आधुनिक यथार्थ के द्वन्द्वात्मक संबंधों को रेखांकित करते हैं। मेवात क्षेत्र की पृष्ठभूमि पर आधारित इन कृतियों में ग्रामीण जीवन, पितृसत्तात्मक ढाँचे और बाज़ारवादी शक्तियों के बीच पिसते आम आदमी की व्यथा का मार्मिक चित्रण मिलता है। यहाँ लोक-संस्कृति, भाषा और रीति-रिवाज केवल परिवेश निर्माण नहीं करते, बल्कि वैश्वीकरण और राजनीतिक भ्रष्टाचार के दौर में अस्मिता और प्रतिरोध का स्वर बन जाते हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि मोरवाल के साहित्य में परंपरा और आधुनिकता के बीच एक निरंतर संवाद और संघर्ष विद्यमान है, जो समाज की विडंबनाओं को उजागर करता है।

KEYWORDS:

भगवान दास मोरवाल, लोक परंपरा, आधुनिक यथार्थ, मेवात अंचल, स्त्री-शोषण.

1. भूमिका

हिंदी उपन्यास परंपरा में लोक और यथार्थ का संबंध सदैव केंद्रीय रहा है। प्रेमचंद से लेकर समकालीन उपन्यासकारों तक लोक जीवन सामाजिक यथार्थ की आधारभूमि रहा है। लोक परंपरा केवल सांस्कृतिक विरासत नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना, अनुभव और संघर्ष की अभिव्यक्ति है। आधुनिक युग में जब समाज औद्योगीकरण, पूँजीवाद, वैश्वीकरण और तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, तब लोक जीवन और उसकी परंपराएँ नए संकटों और चुनौतियों से रूबरू होती हैं। भगवान दास मोरवाल समकालीन हिंदी उपन्यासकारों में एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने लोक परंपरा को आधुनिक यथार्थ की कसौटी पर परखा है। उनके उपन्यासों में लोक जीवन न तो अतीत की स्मृति बनकर रह जाता है और न ही आधुनिकता के सामने पूरी तरह विलुप्त होता है,

बल्कि दोनों के बीच एक जीवंत द्वंद्व और संवाद स्थापित होता है। यह अध्याय मोरवाल के उपन्यासों में लोक परंपरा और आधुनिक यथार्थ के अंतर्संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

भगवानदास मोरवाल समकालीन हिंदी साहित्य के उन लेखकों में हैं जिन्होंने ग्रामीण, सामाजिक, राजनीतिक और संस्थागत विडंबनाओं को अत्यंत प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया है। मेवात क्षेत्र को आधार बनाकर वे आधुनिक भारतीय समाज की जटिलताओं, विरोधाभासों और त्रासद वास्तविकताओं को उभारते हैं। उनके उपन्यासों का आधार आज का सामाजिक यथार्थ, सत्ता-संरचनाएँ, पितृसत्ता, शोषण और सामाजिक विघटन है।

मोरवाल के उपन्यास समाज के विभिन्न पक्षों को उभारते हैं-

- ग्रामीण जीवन की विसंगतियाँ,
- स्त्री-शोषण,
- धार्मिक-सामाजिक पाखंड,
- पिछड़े वर्गों की समस्याएँ,
- सामुदायिक जटिलताएँ।

उपन्यासकार ऐसे पात्र गढ़ता है -

- जो ग्रामीण या स्थानीय जीवन जीते हों
- जिनके व्यवहार, सोच और बोली में लोक-संस्कृति झलकती हो
- जिनकी दिनचर्या में जातीय रीतियाँ और परंपराएँ समाई हों

उदाहरण: दादी, ग्रामीण स्त्रियाँ, कारीगर, मौलवी, पंडित, ओझा, चरवाहा, किसान आदि-ये सभी पात्र लोकजीवन से उठते हैं। मोरवाल के लेख स्पष्ट रूप से बताते हैं कि मोरवाल के उपन्यास 'काला पहाड़' और 'बाबल तेरा देस' में समाज के यथार्थ को डटकर पेश करते हैं और लोकतांत्रिक ढांचे की खामियों को उजागर करते हैं। यहाँ "उपन्यास में लोक-परंपरा" का स्पष्ट, सरल, परीक्षा-उपयोगी और साहित्यिक परिभाषा के अनुकूल उत्तर प्रस्तुत है।

1.1 स्त्री-शोषण का कठोर आधुनिक यथार्थ

मोरवाल जिन मुद्दों को उठाते हैं उनमें स्त्री-जीवन का आधुनिक यथार्थ अत्यंत प्रमुख है।

- 'बाबल तेरा देस' उपन्यास में स्त्री एक "अंधी सुरंग" में फँसी हुई दिखाई देती है जहाँ पिता, भाई, पति और ससुर ही उसके पहरुए बन जाते हैं।
- यह पितृसत्तात्मक संरचना आधुनिक समाज में स्त्री की स्थिति का सटीक चित्रण है।
- उपन्यास साबित करता है कि आधुनिक काल में भी स्त्री अपने ही घर की कैदी बनी रहती है।

1.2 आर्थिक और संस्थागत शोषण-समकालीन यथार्थ

मोरवाल के आधुनिक यथार्थ की सबसे तेज आवाज उनके उपन्यास 'नरक मसीहा' में सुनाई देती है-

- इसमें आधुनिक NGO उद्योग,
- विदेशी फंडिंग,
- सामाजिक सेवा के नाम पर चल रहा "लूट-तंत्र",
- पिछड़े वर्गों की पीड़ा को बेचने वाले संगठनों का काला सच उजागर किया गया है।

बैंक बैलेंस और निधियों की होड़ में "पीड़ा" एक वस्तु बन जाती है-यह आधुनिक समाज का भयावह आर्थिक यथार्थ है। मोरवाल के साहित्य में हाशिए पर खड़े समुदाय (कंजर जाति, मुस्लिम समाज, गरीब ग्रामीण मजदूर) अपने संघर्षों और अस्मिता की लड़ाई में दिखाई देते हैं। 'रेत' उपन्यास कंजर जाति के जीवन का ऐसा वर्णन करता है, जिसमें आधुनिक समाज की "सभ्यता" के ढोंग को चीरकर वास्तविकता सामने आती है। आजादी के बाद भी इन समुदायों की स्थिति में परिवर्तन न आने का यथार्थ वे बेहद मार्मिक ढंग से चित्रित करते हैं।

2. लोक परंपरा : अवधारणा और स्वरूप

लोक परंपरा से आशय उस जीवन पद्धति से है जो सामान्य जनता के अनुभवों, विश्वासों, रीति-रिवाजों, भाषा, श्रम-संस्कृति और सामाजिक संबंधों से निर्मित होती है। लोक साहित्य, लोकगीत, लोककथा, मेले-त्योहार, पंचायत व्यवस्था और सामूहिक नैतिक मूल्य इसके प्रमुख घटक हैं।

भगवान दास मोरवाल के उपन्यासों में लोक परंपरा किसी जड़ या

स्थिर संरचना के रूप में नहीं आती, बल्कि वह समय के साथ बदलती हुई, संघर्ष करती हुई और कई बार टूटती हुई दिखाई देती है। लेखक लोक परंपरा को न तो महिमामंडित करता है और न ही उसका निषेध करता है, बल्कि उसे यथार्थ के संदर्भ में परखता है। भगवान दास मोरवाल जी के विचारानुसार 'शकुंतिका' में यह कहा गया है कि - सवेरे यह खबर चारों तरफ आग की तरह फैल गई। हालाँकि आधे से ज्यादा मोहल्ले को इसका अनुमान रात को ही लग गया था। थाली तो केवल मुनादी के लिए बजी थी। पुष्टि तो इसकी अब हुई है।

3. आधुनिक यथार्थ : सामाजिक-आर्थिक संदर्भ

आधुनिक यथार्थ वह सामाजिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति आज जी रहा है-जहाँ आर्थिक विषमता, वर्ग-संघर्ष, राजनीतिक हस्तक्षेप, नैतिक मूल्यों का ह्रास और सांस्कृतिक विघटन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिकता जहाँ एक ओर विकास और चेतना का संकेत देती है, वहीं दूसरी ओर वह शोषण और विस्थापन को भी जन्म देती है।

मोरवाल के उपन्यासों में आधुनिक यथार्थ किसी अमूर्त विचार के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के ठोस अनुभवों के रूप में उपस्थित है। उनका यथार्थ लोक जीवन से उपजा हुआ है और उसी में अपनी प्रामाणिकता प्राप्त करता है।

4. भगवान दास मोरवाल का रचनात्मक परिवेश

भगवान दास मोरवाल का रचनात्मक परिवेश मुख्यतः हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी समाज से जुड़ा हुआ है। यह क्षेत्र कृषि-प्रधान होने के साथ-साथ सामाजिक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। पारंपरिक लोक संरचनाएँ यहाँ आधुनिक पूँजीवादी और राजनीतिक शक्तियों से टकरा रही हैं। मोरवाल स्वयं इस समाज के प्रत्यक्ष साक्षी रहे हैं, इसलिए उनके उपन्यासों में लोक जीवन का चित्रण अत्यंत विश्वसनीय और अनुभवजन्य है। काला पहाड़, रेत, शकुंतिका, न्याय आदि उपन्यास इस परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति हैं।

5. उपन्यासों में लोक परंपरा का चित्रण

5.1 लोक जीवन और सामाजिक संरचना

मोरवाल के उपन्यासों में गाँव एक जीवंत सामाजिक इकाई के रूप में उपस्थित होता है। पंचायत, बिरादरी, जाति-व्यवस्था और पारिवारिक संबंध लोक जीवन की संरचना को निर्धारित करते हैं। लेखक

दिखाता है कि ये परंपराएँ कभी सामूहिकता और सहयोग की भावना पैदा करती हैं, तो कभी व्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित भी करती हैं। मोरवाल जी ने 'शकुंतिका' में विचार व्यक्त किये भी गांव में लोगों के सोच और सामाजिक चाल-चलन का वर्णन किया है जैसे -- जिस दिन से उग्रसेन के छोटे बेटे अभय को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई है, उसी दिन से उग्रसेन और उनकी पत्नी दुर्गा की पूरी तरह देहभाषा यानी बॉडी लैंग्वेज ही बदल गई है।

5.2 लोक भाषा और सांस्कृतिक बोध

मोरवाल की भाषा में लोक जीवन की आत्मा बसती है। देशज शब्द, बोली और मुहावरे उनके कथ्य को प्रामाणिक बनाते हैं। भाषा यहाँ केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि लोक संस्कृति की संवाहक है। मोरवाल के उपन्यासों का एक अनूठा पक्ष यह है कि उनके पात्र-

- हिंदू
- मुस्लिम

दोनों सांस्कृतिक परंपराओं के साझा मूल्यों को जीते हैं। यह भारतीय लोक-संस्कृति का महत्वपूर्ण रूप है जहाँ मजहबी सीमाएँ कठोर नहीं बल्कि मानवीय संबंधों पर आधारित होती हैं। मोरवाल के पात्रों में यह "मिश्रित लोक-परंपरा" स्पष्ट दिखती है।

मोरवाल की भाषा ग्रामीण और लोकधर्मी है:

- देहाती शब्दावली
- क्षेत्रीय मुहावरे
- लोक-कथन शैली
- खड़ी बोली के साथ मेवाती भाषिक तत्व

ये भाषा-चिह्न उनके उपन्यासों को प्रामाणिक लोक-स्वाद प्रदान करते हैं।

5.3 लोक विश्वास और परंपराएँ

देवी-देवताओं में आस्था, भाग्य-विश्वास, रीति-रिवाज और सामाजिक संस्कार मोरवाल के उपन्यासों में स्वाभाविक रूप से आते हैं। लेखक इन्हें अंधविश्वास कहकर खारिज नहीं करता, बल्कि उनके सामाजिक कारणों और प्रभावों को उजागर करता है। उनके उपन्यासों में

लोक-परंपराएँ मात्र पृष्ठभूमि नहीं बल्कि कथा का अभिन्न हिस्सा बनती हैं। इनमें शामिल हैं-

रहन-सहन और ग्रामीण जीवनशैली

मोरवाल अपने उपन्यासों में गाँव के-

- घरों की बनावट
- पारिवारिक ढांचा
- सामुदायिक श्रम
- सामाजिक रीतियाँ
- शादी-ब्याह और त्यौहार को सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं।

6. उपन्यासों में आधुनिक यथार्थ का चित्रण

6.1 आर्थिक यथार्थ

मोरवाल के उपन्यासों में आर्थिक यथार्थ केंद्रीय भूमिका निभाता है। किसान की बदहाली, मजदूर का शोषण, भूमि का बाज़ारीकरण और पूँजीवादी शक्तियों का वर्चस्व आधुनिक यथार्थ के प्रमुख पक्ष हैं। लोक परंपरा यहाँ संकट में पड़ती हुई दिखाई देती है।

6.2 राजनीतिक यथार्थ

ग्रामीण राजनीति, पंचायतों का राजनीतिकरण और सत्ता का दुरुपयोग मोरवाल के उपन्यासों में तीखे रूप में उभरता है। लोक संस्थाएँ आधुनिक राजनीति के दबाव में अपनी मूल आत्मा खोती हुई दिखाई देती हैं।

6.3 स्त्री यथार्थ

मोरवाल के उपन्यासों की स्त्री लोक परंपरा और आधुनिकता- दोनों के बीच संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। परंपरागत बंधन और आधुनिक शोषण-दोनों ही उसके जीवन को प्रभावित करते हैं। यह स्त्री-यथार्थ मोरवाल के साहित्य को गहराई प्रदान करता है। शकुंतिका एक ऐसी नारी है जो लोक-परम्पराओं के बीच जी रही है। उसका जीवन समाज की मर्यादाओं, रूढ़ियों और मान्यताओं से बंधा हुआ है। लेखक यह दिखाते हैं कि लोक-परम्परा स्त्री को पहचान भी देती है और उसे सीमित भी करती है। यह बड़ी सूक्ष्मता से मोरवाल जी ने अपने उपन्यासों में खरा उतारा है।

7. लोक परंपरा और आधुनिक यथार्थ का द्वंद्व

भगवान दास मोरवाल के उपन्यासों का केंद्रीय तत्व लोक परंपरा और आधुनिक यथार्थ के बीच का द्वंद्व है। यह द्वंद्व सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर दिखाई देता है। सामूहिकता बनाम व्यक्तिवाद, नैतिकता बनाम भौतिकता और परंपरा बनाम परिवर्तन-ये सभी टकराव उनके उपन्यासों में स्पष्ट हैं।

7.1 'बाबल तेरा देस' में लोक-परंपरा का चित्रण

भगवानदास मोरवाल का यह उपन्यास मुस्लिम समाज की स्त्री-पीड़ा पर केंद्रित होते हुए भी लोकजीवन, किस्सागोई, और आंचलिक संस्कृति को गहराई से अभिव्यक्त करता है। यह कथा केवल स्त्री-शोषण की नहीं, बल्कि उस लोक-समाज की भी है जिसकी परंपराएँ, धारणाएँ और जीवन-शैली पात्रों की नियति तय करती हैं। उनके उपन्यासों में मेवात की संस्कृति, भाषा, संयुक्त जीवन-रूप और सामासिक परंपराएँ मूल स्वर में उपस्थित हैं।

7.2 लोक-जीवन और किस्सागोई की परंपरा

उपन्यास का एक विशिष्ट गुण है इसकी लोक-कथा जैसी संरचना।

- कथाविन्यास में किस्सागोई की तरंगें, लोक-कहानियों का लयात्मकपन और गाँव की गलियों से उठती कहावतों की गंध व्याप्त है।
- पुस्तक का वातावरण रेत-माटी से सने पाँवों की ऊबड़-खाबड़ मेड़ों पर चलने जैसा अनुभव कराता है, जो ग्रामीण लोकजीवन की कठोरता को बेहद सजीव बनाता है।
- यह लोक-कथात्मकता उपन्यास को आंचलिकता की गहरी जमीन से जोड़ती है।

7.3 पितृसत्तात्मक लोक-संरचना की परंपरा

उपन्यास में स्त्री-दमन किसी एक व्यक्ति की समस्या नहीं, बल्कि समग्र लोक-सामाजिक संरचना की देन है।

- पिता, भाई, पति और ससुर "लोक-समाज के पारंपरिक पहरुए" की तरह स्त्री पर निगरानी रखते हैं।
- धार्मिक ग्रंथों के नाम पर दिए गए आदेश और रूढ़ धाराएँ लोक-

विश्वासों को कठोर बनाती हैं।

- यह दर्शाता है कि लोक परंपरा कैसे सामाजिक नियंत्रण और नैतिक अनुशासन की तरह कार्य करती है।

7.4 आंचलिक संस्कृति और सामाजिक परंपराएँ

भगवानदास मोरवाल मेवात की सामाजिक परंपराओं और संस्कृति को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से चित्रित करते हैं-

- संयुक्त परिवार, हवेलीनुमा घर, और उनके भीतर की सामाजिक संरचना।
- धार्मिकता और समुदाय आधारित मान्यताएँ, जिनमें स्त्री की भूमिका सीमित और निर्धारित होती है।
- समुदाय के पुरुषों (हाजी चाँदमल, दीन मोहम्मद आदि) का पहरुआ-संस्कृति, जो लोक-व्यवस्था का स्वतः स्वीकृत स्वरूप है।

इन परंपराओं के मध्य ही स्त्री की पीड़ा, संघर्ष और प्रतिरोध आकार लेता है।

8. भाषा, मुहावरे और बोली में लोक-परंपरा

उपन्यास की भाषा में-

- मेवाती अंचल की बोलियाँ,
- स्थानीय मुहावरे,
- देहाती कहावतें और
- मुस्लिम घरेलू संस्कृति के शब्द प्राकृतिक रूप में उपस्थित हैं।

मोरवाल के पात्र जिस तरह बोलते, हँसते, झगड़ते और दुख झेलते हैं, उसमें लोक-स्वर की सहजता स्पष्ट सुनाई देती है। यह भाषिक लोक-परंपरा कथा को जमीन देती है और उसे आंचलिक उपन्यास परंपरा की मजबूत कड़ी बनाती है।

9. लोक चेतना और प्रतिरोध

मोरवाल के उपन्यासों में लोक परंपरा केवल स्मृति नहीं, बल्कि प्रतिरोध की चेतना भी है। जब आधुनिक व्यवस्था लोक जीवन को कुचलने का प्रयास करती है, तब लोक चेतना संघर्ष के रूप में सामने आती है। यह प्रतिरोध ही उनके उपन्यासों को सामाजिक दृष्टि से

महत्त्वपूर्ण बनाता है।

10. निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भगवान दास मोरवाल के उपन्यासों में लोक परंपरा और आधुनिक यथार्थ का संबंध द्वंद्वात्मक और संवादात्मक है। वे लोक जीवन को उसकी संपूर्णता में प्रस्तुत करते हैं- उसकी परंपराओं, उसकी समस्याओं और उसके संघर्षों के साथ। आधुनिक यथार्थ उनके यहाँ लोक जीवन को तोड़ने-मरोड़ने वाली शक्ति के रूप में सामने आता है, लेकिन पूरी तरह नष्ट करने वाली नहीं।

मोरवाल का साहित्य यह प्रमाणित करता है कि लोक परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे की विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर प्रभावित करने वाली शक्तियाँ हैं। यही दृष्टि उन्हें समकालीन हिंदी उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

संदर्भ सूची

1. मोरवाल, भगवान दास – काला पहाड़
2. मोरवाल, भगवान दास – शकुंतिका
3. मोरवाल, भगवान दास – रेत
4. प्रेमचंद - उपन्यास कला
5. नामवर सिंह - कहानी और यथार्थ
6. रामविलास शर्मा – लोक संस्कृति और हिंदी साहित्य